The Atheism of Jaina Philosophy

जैन का अनीश्वरवाद

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

बौद्ध धर्म की तरह जैन धर्म भी ईश्वर को नहीं मानता है, वह ईश्वरवाद का खंडन करता है। ईश्वर को प्रमाणित करने के लिए जिन युक्तियों का उपयोग किया जाता है ,जैन दर्शन उसी का खंडन करता है।इस क्रम में वह ईश्वर के अस्तित्व के लिए दिये गए प्रमाण प्रत्यक्ष और अनुमान दोनों का खंडन करता है।

प्रत्यक्ष के द्वारा ईश्वर का ज्ञान नहीं मिलता है।उसका अस्तित्व युक्तियों के द्वारा प्रमाणित होता है।न्याय दर्शन में ईश्वर को प्रमाणित करने के लिए यह युक्ति दिया गया है कि जिस तरह गृह एक कार्य है जिसे कर्ता ने बनाया है उसी तरह विश्व एक कार्य जिसका कर्ता अथवा सृजनकर्ता मानना आवश्यक है और यह कर्ता या सृजनकर्ता ईश्वर ही है।जैनों ने इस युक्ति को दोषपूर्ण माना है क्योंकी यहाँ पर यह मान लिया गया है कि विश्व एक कार्य है।इसका क्या प्रमाण है कि विश्व एक कार्य है।यहाँ यह भी नहीं कहा जा सकता है कि विश्व सावयव है इसलिए यह कार्य है । नैयायिक स्वयम आकाश को सावयव मानने के बावजूद भी इसे कार्य नहीं मानते।नैयायिक इसे नित्य मानते हैं।यहाँ यह भी कहा जाता है कि किसी भी निर्माण कार्य के लिए शरीर का होना आवश्यक है जैसे कुम्भकार बिना शरीर के घड़ा का निर्माण नहीं कर सकता अतः ईश्वर जिसे अवयवाहीन माना जाता है वह जगत की रचयिता नहीं हो सकता है।यदि यह मान भी लिया जाय कि यह जगत ईश्वर के द्वारा रचित है तब यह भी प्रश्न उठता है कि इस रचना के पीछे उसका प्रयोजन क्या है ?समान्यतः कोई भी चेतन प्राणी किसी कार्य को या तो स्वार्थवश करता है या दयावश करता है।ईश्वर इन दोनों में नहीँ आता है।वह स्वार्थ से वशीभूत होकर विश्व का निर्माण नहीं कर सकता क्योंकि वह पूर्ण है।वह दयावश भी नहीं कर सकता क्योंकि सृष्टि के पहले दया का भाव हो ही नहीं सकता ।दयाभाव तब होगा जब दु:ख हो जो कि सृष्टि पूर्व मानना असंगत प्रतीत होता है।

जैन दर्शन ईश्वर के अस्तित्व के साथ ही साथ उसके गुणों का भी खंडन करता है। ईश्वर को सर्वशक्तिमान, नित्य और पुर्ण माना गया है।सर्वशक्तिमान मानने के कारण उसे सभी वस्तुओं का मूल कारण भी माना जाता है परन्तु इसे सत्य नहीं माना जा सकता है क्योंकि अपने अनुभवों के आधार पर हम यह देखते हैं कि हमारे दैनिक उपयोग की बहुत सारी वस्तुयें

है जो ईश्वर द्वारा नहीं बनाई गई हैं।ईश्वर को एक माना गया है और यह भी बताया गया है कि अनेक ईश्वर को मानने से विश्व में सामंजस्य बिठाने में कठिनाई होगी क्योंकि उनके उद्देश्य में विरोध होगा।यह तर्क तर्कसंगत नहीं लगता क्योंकि यदि अनेक शिल्पकार मिलकर एक महल बना सकते हैं,कई चीटियाँ मिलकर वल्मीक बना लेती हैं और कई मधुमखियाँ मिलकर मधुकोष बना लेती हैं तब अनेक ईश्वर मिलकर इस विश्व का निर्माण क्यों नहीं कर सकते।इस तरह जैन दर्शन ईश्वर के अस्तित्व का निषेध कर अनीश्वरवाद को अपनाता है।प्रश्न अब यह उठता है कि क्या कोई धर्म ईश्वर का निषेध कर रह सकता है ।

विश्व में अनेक ऐसे धर्म पाये जाते हैं जिन्होंने ईश्वर का निषेध किया है पर हम यह भी पाते हैं कि वहाँ भी किसी न किसी प्रकार से ईश्वर अथवा उसके सदृश्य किसी सत्ता की कल्पना की गई है, इसके पीछे का कारण मनुष्य की अपूर्णता एवम ससीमता है।यद्यपि जैन धर्म ईश्वर का खंडन करता है पर व्यवहारिक रूप में ऐसा हुआ नहीं है क्योंकि जैनियों ने ईश्वर के स्थान पर तीर्थंकरों को माना है।ईश्वर के लिए जिन गुणों की कल्पना की गई है, वे सभी तीर्थंकरों में पाए जाते हैं।ये मुक्त होते हैं।जैन धर्म में पंच -परमेष्टि - अर्हत ,सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु को माना जाता है।पंच-परमेष्टि की पूजा जैनियों के लिए दैनिक कार्यक्रम का एक हिस्सा है।जैनियों का पूजा अर्चना में अकाट्य विश्वास है, वे तीर्थंकरों को ईश्वर का रूप मानते हैं।तीर्थकंर ईश्वर न होते हुए भी ईश्वरत्व धारण किये हुए माने जाते हैं।

जैनियों में ईश्वर पर अविश्वास रहने के बावजूद वे धर्म में विश्वास करते हैं।तीर्थंकरों के राह पर चलकर वे उन्हीं की तरह सिद्ध और मुक्त होना चाहते हैं।जैन धर्म में पंचमहाव्रत - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह की भी मीमांसा हुई है और प्रत्येक जैनी इसे सतर्कता से पालन करते हैं।तीर्थंकर ही जैन धर्म के ईश्वर हैं क्योंकि ईश्वर के लिए जिन गुणों की आवश्यकता है वे उनमें निहित है।इस तरह ईश्वर में अविश्वास रहने के बाद भी किसी न किसी तरह जैन दर्शन ईश्वर पर निर्भर करता है।